राधा नाम नदिया की धारा बहि जाय रे।।

ब्रह्मा नाम रटैं पोथी लै
पोथी के पन्ना नदिया में बहे जायं रे।
सरस्वती नाम रटैं बीना लै
बीना के तार नदिया में बहे जायं रे।
गौरा नाम रटैं सजधज के
गौरा की साड़ी नदिया में बहि जायं रे।
विष्णू नाम रटैं आयुध लै
शंख चक्र नदिया में बहे जायं रे।
लक्ष्मीनाम रटैं कमलन लै
कमल के फूल नदिया में बहे जायं रे।
नारद नाम रटै वीणा लै
वीणा के तार नदिया में बहे जायं रे।
हनुमत नाम रटैं झंझा लै
हनुमत की पूंछ नदिया में बही जाय रे।
गोपी नाम रटैं ठुमका लै
गोपिन को लंहगा नदिया में बह्यो जाय रे।।

हरि बिन सब दुनिया सूनी, मोय आवै हिचकी।।

मथुरा गये फिर ब्रज नहिं आये
निठुराई ऐसी कीनी, मोय आवै हिचकी।
वे सावन दिन संग-संग झूले
बूंदरिया पर रहीं झीनी, मोय आवै हिचकी।
वे रातें अब सपने की भईं
रास में भुजा भर लीनी, मोय आवै हिचकी।
खोर सांकरी दान लेन की
वे बतियां रस भीनी, मोय आवै हिचकी।
यमुना की वे नीली लहरें
याद श्याम की दीनी, मोय आवै हिचकी।।

------o------

गोरी काम चिता में जर रही, कोई बचायवे वारो नाय।।

प्रगटी आग हिये में पहले
पीछे सब तन लागी फैले
बाहर भीतर रोम रोम जलै
बैठी बैठी दुनियां देखै, गोरी पजरी जाय।

जर रही चोली चूनर छाती
कमर जांघ जरती सब गाती
सेंदुर मांग जरै बिन बाती
लंहगा साया जरै आग ये गहनन में भहराय।
जरै कौंधनी बिछुवा गूंठी
बोल सके ना आग अनूठी
कंगना मेंहदी जर रही मूठी
आँखन को काजर औ बेंदी, आग सबै कुछ खाय।
दस इन्द्रिय मन बुद्धि जरै हैं
अंहकार औ चित्त जरै हैं
स्थूल सूक्ष्म सब देह जरै हैं
जीते जी सब दुनिया जरती जल थल नभ में छाय।
जग की इच्छा काम अग्नि है
हरि सों प्रीती अग्नि बुझन है
कृपा कन्हैया ताप नशन है
काहे जरती जीव वधूटी हरि पद निर्भय पाय।।

------o------

जिस गली से दिवाने तेरे चले,
उस गली प्रेम धारा करोड़ों चलीं।।

दिवाने जो पी नाम प्याले चले
नाचते गाते मस्ती लुटाते चले
जिस गली नाम गंगा बह के चली,
उस गली गंगा मैया करोड़ों चलीं।
प्रभु प्रेम मे जो मर मिटके चले
वे अमर हो चले, वे अमर हो चले
जिस गली ऐसे अमरों की टोली चली,
उस गली मौत की मौत आ निकली।
ख़ाक मे जो हस्ती मिटाते चले
उसकी लौ से ही लौ को मिलाते चले
जिस गली ऐसी प्रेम की ज्योति जली,
उस गली माया की ये अंधेरी टली।
जिनको जग की न माया व्यापी जरा
मोह ममता ने छूआ न जिनको जरा

जिस गली उनकी पद रेणु उड़के चली,
उस गली जम की फांसी की विपदा टली।
जिनने छोड़े सहारे जग के सभी
जिनकी बाँहें स्वयं कृष्ण ने ही गही
जिस गली से ऐसे सहारे चले,
उस गली पार नैया सभी की चली।
जिनकी आहें सदा खींचती प्रान को
जो बुलाते ही रहते सदा श्याम को
जिस गली टेरती ये टोली चली,
उस गली उनकी करुणा बरसती चली।
जिनको सोने व चांदी ने पकड़ा नहीं
जिनको भोगों ने कीड़ा बनाया नहीं
जिस गली ऐसे उज्जल सितारे चले,
उस गली काली बदली कभी न ढली।।

------o------

बिगड़ी बनाले संकट हटाले
हरि की शरण चल ओ अनजान।।

ध्रुव ने बनायो उच्च पद पायो
नमो भगवते वासुदेव गायो
राधे-राधे गा ले संकट हटा ले, हरि की..।
द्रोपदी पुकारी हे गिरिधारी
नगन भई मेरी साड़ी उघारी
हरि को बुला ले संकट हटा ले, हरि की..।
रानी महारानी मीरा दिवानी
विष को पी गई सर्प लिपटानी
नृत्य करा ले संकट हटा ले, हरि की..।
अधम ते अधम अधम अति नारी
बेर खवाय सबरी ने संवारी
भोग लगा ले संकट हटा ले, हरि की..।
प्रहलाद ने गायो नरसिंह पायो
हिरणाकुश वाय मार न पायो
सुरत करा ले संकट हटा ले, हरि की..।।

जानै कब तक कानन मूंदैगो मैं टेर-टेर के हारी।।

सभा बीच द्रोपदी पुकारी
नगन करन को मोय उघारी
जाने कब तक लाज बचावैगो, गोवर्द्धन गिरिधारी।
पांचो पति सामइ बैठे हैं
जूआ में मोय हार गये हैं
बुआ की पत राखैगो तेरे, भैयन की मैं नारी।
दादा भीष्म द्रोण गुरू चुप हैं
सुसर आंधरो ना देखै है
कोई सुनैं न कान फूट गये, सभा अधरमी भारी।
धरती के सब चुप हैं राजा
अन्यायी कौ डंका बाजा
दुःशासन को को रोकै दस सहस गजन बल धारी।
दुःशासन खैंचे मेरी सारी
पाँच पती तौहू मेरी ख्वारी
जाने कब तक चीर छुड़ावैगो, मैं अबला घिरी बिचारी।

दांतन दाब रही है सारी
दोनों हाथन पकर किनारी
अबहू तो वह आवैगो, ब्रजवासी कृष्ण मुरारी।
झटके ते छूटी है सारी
गोविन्द टेर रही है नारी
या सारी बीच समावैगो, वह व्यापक ब्रह्म विहारी।
खेंचत-खेंचत हार थक्यो वह
गिर्‌यो दुःशासन चीर रह्यो बह
वह शरणागत को राखैगो, यह विरद कबहुं ना टारी।।

------o------

लगन ऐसी लागै कुंवर कन्हैया।।

नाम तिहारो पल-पल लेऊं,
पिऊ-पिऊ जैसे रटत पपैया।
छूटै ना ये लगन तिहारी,
जैसे पतंगा अगनी जरैया।
आसूं बहवैं तुमरे मिलन कूं,
जैसे मेहा झर बरसैया।।

काहे मल-मल चाम कौ धोवै काया गंदी देख गुमानी।।

या चमड़ी के भीतर औरे
मांस हाड़ की गंदी ठौरे
ऊपर वस्त्र लपेटै धौरे
मल मूत्रन हंडी पर, तेरी नीयत बुरी लुभानी।
सुख में खाये पानन बीड़ा
विष्ठा विषयन कौ बन्यो कीड़ा
भोगन में रोगन की पीड़ा
भोग रोग ते मृत्यु निकट फिर लंबी दुःख कहानी।
एक दिना जब प्राण जायेगो
मुर्दा बनके तू सोवैगो
तेरो बेटा तन धोवैगो
धोय ओढ़ाय चादरो फूंकै, रह जाय राख निशानी।
मन मन्दिर कूँ निर्मल कर लै
ज्ञान दीप की ज्योति जोर लै
भक्ति भाव कौ साज सजाय लै
मन में धर लै ध्यान श्याम राजा राधा रानी।।

ये काया मेरी अवगुन की है भरी,
नाथ कैसे भव सिन्धु से हो तरी।।

तुम्हे रिझावे को कछु गुन नाही
संमुख आयवे को मुख नाही
ये काया मेरी पापों की है भरी, नाथ कैसे..।
नाम पतित पावन सुन्यो तेरो
याते साहस पर्‌यो कछु मेरो
ये काया मेरी सब विधि है बिगरी, नाथ कैसे..।
तेरी शरण लई है प्यारे
चाहे जिवावै चाहे मारै
ये काया मेरी निशि दिन जावै गरी, नाथ कैसे..।
मेरे अवगुन पर ही रीझो
मेरे पापन पर मत खीझो
ये काया मेरी चरनन मे आ परी, नाथ कैसे..।।

जाको राखै कृष्ण कन्हैया वाको मार सकै नाय कोय।।

माँगी गुरु दक्षिणा संदीपनि
डूब मर्‌यो सुत सागर लहरनि
गये स्याम यमपुर के द्वारनि
पुत्र मरे जीवित लाये गुरू-मात न दीनी रोय।
मरे द्वारिका नौ सुत ब्राह्मन
करी प्रतिज्ञा अर्जुन राखन
राख न सक्यौ चल्यौ तन दाहन
भूमा ते दस सुत लाये हरि पहले गये जो खोय।
युद्ध हुआ महाभारत भारी
कौरव पाण्डव लड़े जुझारी
अठारह अक्षौहिणी सेना मारी
ऐसो युद्ध भयो नाय अब लौं नाय आगे हू होय।
खूनन नदिया बही धार में
हाथी बहै बबूला जामें
पक्षी एक न बच्यौ युद्ध में
बच्यौ तहाँ भारुहि कौ अण्डा घंटा बीच समोय।

अश्वत्थामा ब्रह्म अस्त्र लै
छाँड़ दियो अभिमन्यु पुत्र पै
गर्भ घुसे हरि हाथ चक्र लै
रक्षा करी परीक्षित की हरि ब्रह्म अस्त्र दियो धोय।
लगी कर्म की फाँसी जीवन
बंधे दुख पावैं यम शासन
जनमैं मरैं फेर लें जनमन
काल न तोर सकै इक बारहु कृष्ण शरण जो होय।

------o------

बोल हरी बोल हरी, हरी हरी बोल,
केशव माधव गोविन्द बोल।।

कृष्ण नाम है तारन हारा
सुमिर-सुमिर उतरै नर पारा
मूरख मन की आँखें खोल, केशव..।
मुट्ठी बांधे जग में आना
खाली हाथ पसारे जाना
ज्ञान की बातें मन में तोल, केशव..।

दो दिन में तू मरने वाला
जली चिता पै फुंकने वाला
सुन लै काल का बजता ढोल, केशव..।
धरती सोना संग न जावैं
महल-दुमहले ह्यां रह जावैं
इसी गरब में है बेडोल, केशव..।
झूठी माया अब तक जोड़ी
जनम-जनम को है गयो कोढ़ी
सच्चे धन का कर ले मोल, केशव..।
दिन खोयो झूठे झगरन में
रात गंवाई है विषयन में
मल और मूत्र का है सब झोल, केशव..।
अब भी चेत सम्हल जा भैया
प्रेम से भज ले कुँवर कन्हैया
वृन्दावन में करैं किलोल, केशव..।।

------o------

जीवन के ये दिन जावैं हैं, चेतो भैया गोपाल भजो।।
वा दिन की याद करो तुम सब
वृद्धों से घृणा करै जग सब
तब कोई काम न आवैं हैं, चेतो भैया..।
जब नयन पुतरियां उलट गईं
तिरिया-सम्पत्ति सब छूट गई
शमशान भूमि लै जावैं हैं, चेतो भैया..।
जिनको समझ्यो अपनो अपनो
जिनके हित भयो तेरो मरनो
वे ही अब चिता सजावैं हैं, चेतो भैया..।
जिनकी सेवा में जन्म गयो
सब तन मन धन बरबाद भयो
वे ही अब आग लगावैं हैं, चेतो भैया..।
ये धूं धूं करके चिता जली
कहती जग ममता नहीं भली
सब देख-देख पछतावैं हैं, चेतो भैया..।

कह रही चिता की राख यही
सब की इक दिन गति होय यही
अंतिम संदेश सुनावैं हैं, चेतो भैया..।
सब प्रेम करो श्री माधव से
वे पार करैं भव सागर से
भक्तन को सुख पहुँचावैं हैं, चेतो भैया..।।

------o------

जानें राधा नाम न गायो है,
वानें विरथा जनम गमायौ है।।

नवें महीना गर्भ ते निकस्यौ, बालापन खेल बितायो है।
भयो तरुन विषयन को धायो, तिरिया ते नेह लगायो है।
माया जोरी लाख करोरी, तृष्णा लोभ बढ़ायो है।
भाइ बन्धु औ कुटुम कबीला, कोऊ काम न आयो है।
अन्त समय में नैंन मूँद लिये, जीवन धूरि मिलायो है।
स्वांसा निकली हंस गयो उड़, कोऊ पता न पायो है।
आयो गयो कहाँ पै पंछी, मरम न कोई बतायो है।
जग की रीति यही चली आई, गयो फेर नहिं आयो है।
राधा रट हरि वश ह्वै जावैं, गुरू ने ज्ञान सिखायो है।।

काउ दिन एक पलक में ढह जाएगी,
तेरी काया की हवेली।।

हड्डी की है ईंट लगाई
खून मांस ते भई चिनाई
खाल चीकनी भई लिसाई
काउ दिन चौमासे में बह जाएगी तेरी काया..।
चाहे जितनी मौज उड़ाय लै
मल-मल के स्नान कराय लै
तेल फुलेलन ते सजवाय लै
काउ दिन एक फूँक में उड़ जाएगी तेरी..।
महल दुमहले खूब बनायलै
नार नवेली गले लगायलै
बेटा लैकें लाड़ लड़ायलै
काउ दिन तिरिया रोवत रह जाएगी तेरी..।
तैंने ना भोगन कू भोगे
भोगन ने तोकूं है भोगे
मरी न तृष्णा घेरे रोगे
काउ दिन नाम निसानी मिट जाएगी तेरी..।।

अरे हरि चरनन नेह लगाय लै, सिर पै काल रह्यौ मंडराय।

देख यह काया फुँक जाएगी
छूट ह्यां माया रह जाएगी
तेरी तिरिया संग नाय जाएगी
आज काल में ठाठ उठैगो, फिर काहे बौराय।

देख क्यौं तू ऐंठो डोलै
गरब की बानी क्यौं बोलै
कपट की गांठें नहिं खोलै
लख चौरासी में भरमैगो, फिर पीछे पछताय।

सीख की बात नाय मानै
मोह-ममता में मन सानै
कृष्ण कौ प्रेम नाय जानै
मानुष कौ तन छूटे पीछे फिर मिलवे कौ नाय।

साधु की संगत कर भैया
मिलै निश्चय कृष्ण कन्हैया
भँवर ते लगै पार नैया
काल फाँस ते छूट जायगो सुख सागर लहराय।

मनुआ नेक कह्यो नाय मानै,
मै तो पच-पच के गयो हार।।

कहा सुनाऊँ अंतरयामी
विषयन की जो करै गुलामी
दीन-दयाल कृपानिधिं स्वामी
दीनानाथ कृपा करकें अब मोहे लेहु उबार।

तुम को छांड़ कहाँ मैं जाऊँ
काके द्वार निहोरा खाऊँ
काके हाथन जाय बिकाऊँ
ऐसो कौन सुनै जो चित दै मेरी करै सम्हार।

गौर नील छवि नेंक दिखाओ
जुगल चरण रस मोहि पिवाओ
कुञ्ज कुटी की छाँह बसाओ
बिचरौं गहवर वन कुञ्जन में राधे कृष्ण पुकार।

टहल बुहारी करिहौं निशिदिन
जुगल नाम गुन गैहों निशिदिन
जूठन को रस पैहों निशिदिन
लाल-लाड़ली मेरे मन-मन्दिर में करो विहार।।

खिलौना माटी को तू, मांटी में मिल जाय नाम।।

मांटी में ते अन्न बन्यौ है
अन्न खायके खून बन्यौ है
हाड़ मांस औ वीर्य बन्यौ है
पिता-माता की मांटी मिलवे ते बनी तेरी चाम।
मांटी पै ये महल बनायौ
लकड़ी लोहा ईंट लगायौ
ये सब मांटी ने प्रगटायौ
हवेली नाय बचै जब मांटी में मिल जांय गाँम।
सोना चांदी हीरा लायो
ये सब मांटी ते खुदवायो
या मांटी तारे मुंदवायो
मर्‌यो जब रह गई मांटी बंद तिजोरी दाम।
मांटी ते तेरी बनी बहुरिया
जाको लायो गहनो रूपिया
मांटी छोरा छोरी दुनियाँ
छोड़ दै माया मांटी राधे भजो और श्याम।।

पर्‌यो पलका पै सोवै, मरवे की खबर है नांय।।

मौत परेखौ करै कौंन कौ
बालक बूढ़े और ज्वानन कौ
जब आवै तब तोरै तन कौ
गई स्वांसा नांय आवै, मरवे की खबर है नांय।
जा काया को दूध पिवायो
सुन्दर वस्त्रन ते सजवायो
सुन्दर नारी कण्ठ लगायो
वही काया फुंक जावै, मरवे की खबर है नांय।
माया जोड़ बड़ो गरबायो
टेढ़ी मेढ़ी चाल दिखायो
जिनते हँस-हँस प्रेम बढ़ायो
वही रोवत रह जावैं, मरवे की खबर है नांय।
मूरख जग सों प्रेम हटाय लै
चेत-चेत हरि को अपनाय लै
या देही को सफल बनाय लै
उमरिया कटती जावै, मरवे की खबर है नांय।

पल पल आयु घटै रे प्राणी, हरि भज छोड़ सबइ जंजाल।
उमरिया घटती ही जावै
गयो दिन फेर नहीं आवै
मौत सिर पै चढ़ती आवै
भजन करै ना भूल्यो डोलै पर्‌यो काल के गाल।
भये ह्यां बहुत बड़े बलवान
तीन लोकन में उनके नाम
धूर में मिले न रहे निशान
हिरणाकश्यप रावण कंसा खाय लियो यह काल।
बचैगो तू हू कैसेहु नाय
भलै करलै कितनोई उपाय
कहूँ में भैया प्रेम लगाय
झूठे दुनियाँ के काजन में मत भूलै गोपाल।
बड़े हैं गोविन्द दीनदयाल
पिवायो जहर पूतना घाल
दई मैया की गति नन्दलाल
ऐसे स्वामी के चरनन की धूरि लगावो भाल।

दीनानाथ कृष्ण गिरिधारी, मेरी टेर सुनो चित लाय।।
तुम ही एक हमारे प्यारे
तुम ही सब कुछ नन्ददुलारे
तुम ही जीवन तुम रखवारे
मेरी अँखियन के हो तारे मारग तो दरसाय।
आस तिहारी हम कूँ पल-पल
जैसे मछरी और जमुना-जल
बिना मिले तरफै वह कल-कल
हे घनश्याम सुजान साँवरे प्रेम बूँद बरसाय।
कहूँ कहा तुम जाननहारे
घट-घट के हो परखनहारे
हम भिक्षुक तुम राजदुलारे
तनक दया की तनक कोर पै तुम्हरो कछु नाय जाय।
टेरत-टेरत हम तो हारे
खोजत खोजत थक गए भारे
ढूँढत ढूँढत नैना मारे
तन मन औ जीवन ते हारे परे द्वार पै आय।।

करुणा सुनो कृपा के सागर, दुखिया पर्‌यो एक असहाय

करुणा कर द्रोपदी पुकारी
नग्न करन कूँ चीर उघारी
लज्जा रखो मेरी गिरिधारी
देर करी नाय प्रगट भये, साड़िन के ढेर लगाय।

करुणा कर गजराज पुकार्‌यो
लड़त-लड़त निज बल को हार्‌यो
एक पुष्प हरि तुम पर वार्‌यो
देर करी नाय रक्षा कीनी, नंगे पायन धाय।

मेरी बेर देर क्यों कीनी
मेरी तनक खबर नांय लीनी
इतनी निठुराई क्यों दीनी
पकरो हाथ बड़ो भवसागर, मेरी करो सहाय।

कृष्ण कृपालो प्राण नाथ प्रिय
सर्वस स्वामी श्री राधा पिय
ह्रदयेश्वर तुम हो तन में जिय
शरण-शरण हरि देखो इतकूँ कृपा प्रेम बरसाय।।

ये गौर-श्याम की जोरी मो अंधरे की दो आँखी।।

आत्मा ज्योति शुध्द चेतन यह
माया विषय अशुद्ध अंधकह
भूल्यो रूप भोग तापन सह
जीव पखेरू जड़ता पायो कटी सबइ पाँखी।

बहुतै सुन्यो पुरानन वेदन
चेत्यो ना यह रह्यो अचेतन
केवल पर्‌यो कृपा के आसन
भजन कियो ना कबहुंक यद्यपि संतन बहु भाखी।

नहिं विद्या नहिं साधन कौ बल
भक्ति भाव कौ नाहीं संबल
विषयन में मन है रह्यो चंचल
ऐस्यो सन रह्यो विषय विलासन ज्यों विष्ठा माखी।

तुम बिन कोउ संभार सकै ना
दया भाव दिखराय सकै ना
बिगरो जीव सुधार सकै ना
ऐसी कृपा करौ लीलारस लै अँखियाँ चाखी।।

करले दृढ़ विश्वास युगल कौ, काहे रह्यो झकोरा खाय।।

भूल गयो जब मात पेट में
उलटो टंग रह्यो मल मूतन में
रक्षा करी वहाँ छिन-छिन में
जठर अग्नि ते जरन न दीयो, लीयो तोय बचाय।
गर्भवास में भोजन दीयो
बाहर तैनें दूध जो पीयो
दूध भर्‌यो स्तन हरि ने कीयो
जल में थल में नभ में देवै, क्यो चिन्ता मंड़राय।
मूरख तोयं इन्द्रिन ने लूटी
तोहि पिवाय विषय विष घूंटी
विषय भोग ते दोनूं फूटीं
आनंद रूप जुगल को भूल्यौ, झूठे सुख भरमाय।
भूल्यो प्रभु को ऐसी माया
तृष्णा गली न गल गई काया
ऊपर देख मृत्यु की छाया
कृष्ण भरोसो छाड़ नरक कूँ सरपट दौर्‌यो जाय।

राधे गोविन्द भज मस्ताने काहे माया में बौरे।।

ये काया तेरी ना ये तो बनी काल कौरे,
ब्रज रज घिस माथे मिट जावै चौरासी दौरे।
मीठो खट्टो चिकनो चुपरो जेंवत रस लौरे,
अमृत नाम युगल रस भूल्यौ विषयंन झकझोरे।
केश संवार पहिर अम्बर नीले पीरे धौरे,
तज हरि आश्रय श्वान बन्यो उझकत ठौरे-ठौरे।
सोना चाँदी गहनो गांठी गिन गिन के जोरे,
साँसा छोड़ गई यह देही सुत कपाल फोरे।
जा गोरी गोरी तिरिया नें तेरो चित चोरे,
खावैगी तोकूँ तन धन चूसत थोरे-थोरे।
जीजा सारी काकी ताई भाभी सब भोरे,
स्वारथ बिगरत आँख दिखावैं नाते हैं तौरे।
मैं मेरी, तू तेरी, या ने भव में हैं बौरे,
कृष्ण नाम भज जाने बन्धन पापिन के छौरे।।

------o------

जडभरत

कह रहे भरत रहूगण नृप ते, क्यों भ्रम में भूल्यो भटकै।।

मांटी देही, राजा मांटी, प्रजा, राज्य सब मांटी है,
मांटी ढोवनहारी पांव पीड़री जंघा मांटी है,
मांटी है पालकी बैठ तू मांटी चटकै मटकै।
मांटी काया पै गरबायो, मांटी के मद फूल्यो है,
दुर्बल दीनन कूँ फटकारै, दया कृपा ते सूनो है,
सब कौ रक्षक बनैं हिये में दया कृपा ना फटकै।
बात बनावै ज्ञानी जन सी काम कसाई पूरौ है,
सब में आत्मा भाव किये बिन वाचक ज्ञान अधूरो है,
मिथ्या जग व्यवहार फंसे जो संत जनन कौ खटकै।
परमाणुन ते धरती मांटी, मांटी ते सब देह बने,
मिथ्या सब परमाणु कल्पना मन की माया मात्र बने,
वासुदेव श्रीकृष्ण सत्य सब जगती प्रलय में सटकै।
यज्ञ दान तप गायत्री श्रुति साधन कछु नहिं होवै है,
संत शरण ह्वै पद-रज सेवै याते हरि मिल जावै हैं,
संत वही प्रतिपल हरि चर्चा अन्य कथा सब झटकै।

माता देवहूति सों कपिलदेव जी करैं ज्ञान उपदेश।।

कान त्वचा दृग जीभ नाक ये
कर पद गुदा लिंग बानी ये
ज्ञनेन्द्रिय कर्मेन्द्रिय दश ये
मन स्वाभाविक लगै स्याम में सहजा भक्ति रमेश।
भक्ति अहैतु मुक्ति ते पावन
जरै कोश संस्कार लिंग तन
देवै अनचाहे श्रीधामन
नाश न होवै कबहु भक्त कौ, जिनको मैं सर्वेश।
मेरे हित जे तजै अहंता
तन धन नारी सुत की ममता
भक्तन सौं वह करै साधुता
मृत्यु रुप भवसागर तारूँ, तिनको मैं देवेश।
हिंसा दम्भ द्वेष ये तामस
विविध कामना भक्ति है राजस
सात्विक लक्ष्य कर्म जावैं नस
भेद बुद्धि वारी त्रिगुणा ये, भक्ति कही निःशेष।
चौथी निर्गुण भक्ति भाव है
मन मो में निष्काम लगै है

गंगधार ज्यों सिंधु चलत है
चारों मुक्ति न चाहै प्रेमी, बिन सेवा को लेश।
जो काहू को करै अनादर
करै उपेक्षा निन्दा मत्सर
भजन न सफल होय कितनों कर
सब सौं द्रोह, द्रोह है मों ते, सबको मैं ह्रदयेश।
मात भोग वश जीव नरक क्षति
फिर चौरासी भटक मनुज गति
गर्भ नरक ते निकस भोग मति
नारी रति सों नारी होवै, मिलै दण्ड नरकेश।
पुण्य सकाम भोग ही लावै
जब निष्काम कृष्ण पद पावै
देह भाव आसक्ति नसावै
भक्ति योग निष्काम भजो हरि सुन मेरी मातेश।
माँ सुन बोली वंदन निष्छल
श्वपच विप्र ते श्रेष्ठ नाम बल
गये कपिल माँ ध्यावैं अविचल
भई सिद्ध मैया पद पाई नित्य मुक्त राधेश।।

बंगला तीन खनन कौ सुन्दर, बंगला भीतर बैठ्यो कौन।।
ऊपर को खन ज्ञान करन को
मध्य खण्ड है प्राण धरन को
नीचे नीव अधार कर्म को
कोटि बहत्तर लगी नसैनी, चढ़वे वारो कौन।
मट्टी ईंट औ गारो जल को
रुप अगिन को प्राण वायु को
नभ को छिद्र ठौर पाचन को
छह तारन में बंद कौन और छूटनहारौ कौन।
आँख न देखै देखै वोई
कान न सुनै सुनै है वोई
नाक न सूंघै सूंघै वोई
बुद्धि न सोचै सोचन हारो बुद्धि प्रकाशक कौन।
समझी कहा बताय सहेली
अंधी बन मत तू अलबेली
अबलौं अंधरन में तू खेली
बूझ पहेली बूझनहारो पूछनहारो कौन।।

काया पिंजरा नौ दरवाजे, हंसा जाने कब उड़ जाय।।

द्वै द्वै कान आँख नासा हैं
ये छह सतमो मुख कौ द्वार है
आठ नवौ मल मूत्र द्वार है
कोई न जानै कौन द्वार ते सांसा अपनी जाय।
बैठ्यो पंछी जीव पींजरे
हरि माया सब भये बावरे
केवल पिंजरा सेवत सबरे
पंछी अपनी हू सुधि भूल्यो, पिंजरा रहे लुभाय।
पिंजरा गंदौ मल मूत्रन को
हाड़ मांस कीड़ा पीपन को
धोखो खायो देख चाम को
पल में पिंजरा टूट जायगौ, मूरख चेतै नाय।
दुनिया है पिंजरन को मेलो
रूखन पै चिरियन को मेलो
फुर्र उड़े गिर ते इक डेलो
ना जानैं को कहाँ ते आयो कौंन कहाँ पै जाय।।

कोई न जानै कब फट जावै, काया जल को एक बबूलो।

पानी आयो मात पिता ते
बन्यो बबूलो रंग रुप ते
नौ मासन में काल ब्यार ते
हाथ पाँव सिर अंग बने तब बन गयो मोट मटूलो।
त्वचा मांस औ रक्त मात को
मज्जा हड्डी स्नायु पिता को
ये छह कोष बनावैं तन को
चिकनी चुपरी खाल लपेटी जाय देख मन भूलो।
यह तन मल मूत्रन की हंडी
देख बने सब रंडी भंडी
भोगत सबरी आयु विखंडी
रूप तेज बल खोवत भोगत नरक द्वार को झूलो।
काल ब्यार बह रही प्रचंडी
चेतन काया करती ठंडी
हंडी में लै मारै डंडी
हंसा उड़ जावै जब लागै काल दंड को हूलो।।

मेरे मन मन्दिर में एक बार तो आजाओ गिरिधारी,
प्यारे आ जाओ गिरिधारी।
गिरिधारी बनवारी, मन मोहन कुंज बिहारी
प्यारे आ जाओ गिरिधारी।।

बहुत बार है टेर लगाई
करुणा नैनन में घिर आई
ये रोया एक दुखारी प्यारे आ जाओ..।
मग जोहत अंखियां पथरायीं
दर दर पै माया टकरायी
ये देखो दशा हमारी प्यारे आ जाओ..।
थोड़ी कृपा इधर बरसावो
प्रेम बूंद प्यासे को प्याओ
मै प्यासा एक भिखारी प्यारे आ जाओ..।
भेंट नही मैं कुछ भी लाया
खाली हाथ तेरे दर आया
मैं तेरा प्रेम पुजारी प्यारे आ जाओ..।
प्यार करो चाहे ठुकरा दो
पास बुलावो दूर भगा दो
मैं सब विधि शरण तिहारी प्यारे आ जाओ..।।

ब्रज की रज में धूर बनूं मैं, ऐसी कृपा करो महाराज।।

धूर बनूं हरि चरनन पागूं
उड़ उड़ के अंगन में लागूं
बार बार ये ही मैं पाँगूं
मोपै विहरैं श्याम राधिका सब दुख जावैं भाज।
कोमल चरन राधिका प्यारी
उर धरि सेवैं छैल बिहारी
ऐसौ रस चरनन में भारी
वाकूँ पाऊँ बनूं धन्य वृन्दावन रस सरताज।
रज में खेलैं रंग मचावैं
रज में हिल मिल रास रचावैं
रज में फूलन सेज बिछावैं
रज में करैं विलास जुगल मिलि जानैं रसिक समाज।
ब्रज की धूर श्याम को प्यारी
खाई बालकृष्ण मुख डारी
धमकावै जसुदा महतारी
माखन दूध दही तज रोवै रज खावन के काज।।

तेरी सब बाधा कट जावै प्राणी सुमिर-सुमिर हरिनाम।

काहे को तू भयो उदासा
कृष्ण चरन की करले आसा
देख तोर लै जम की फांसा
जनम अनेकन भटकत डोल्यौ थक गये तेरे पाम।

अब भी तेरे वही हैं ढंगे
लग रहे मन में लाखों धन्धे
खतम न होंगे ये सब दंगे
झूठ कपट और छल छंदन में सब जीवन बेकाम।

सिर चल रही काल की चक्की
बड़े बलिन की छूटी छक्की
फिर भी तेरी धुन है पक्की
मेरी-मेरी कर मर लेगो, झूठे हैं धन-धाम।

एक दिना जब काल आयगो
झपट प्राण तेरे लै जायगो
पजर-पजर ह्यांही फुक जायगो
राधा कृष्ण शरण चल भैया, येही सांचो काम।

राधा राधा नाम अधारा
निर्मल बहती जमुना धारा
नैया तेरी लग जाय पारा
वृन्दावन कदमन की छैंया, लगै ताप न घाम।।

------o------

पुरवैया बह रही सनन सनन पत्ता उड़तो जाय।।

ऊँचौ वृक्ष बड़ो दरसायौ
फल फूलन ते घनो सुहायौ, हर्‌यो भर्‌यो लहराय।
पत्ता टूट गिर्‌यो डारी ते
लै गई ब्यार एक झौके ते, कौन देश लै जाय।
उड़तो छोड़ गयो गामन को
पर्वत नदिया अरू बागन को, धरती पै गिर जाय।
पत्ता हम सब जीव बने हैं
काल ब्यार ते नाच रहे हैं, अंत धूर है जायं।
कृष्ण बहिर्मुख है यह जब तक
चढ़ी अविद्या छावै तब तक, शरण अविद्या जाय।।

------o------

जारै ईंधन राशि को धूमकेतु जु प्रचंड।
नाम जरावै अति प्रबल पाप पुंज पाखंड।।
हीरा फोर्‌यो न फुटै घन की चोट चलाय,
जा मुख हरि को नाम वह कैसेहु नहिं फुट जाय।
लंका सोने की जरी तनक भक्त अपराध,
कोटि जन्म जरते रहें जे दुःखवत हैं साध।
गर्जन सुन वन केहरी भाजे गर्दभ स्यार,
पाप भजत सुन नाम को कीर्तन सब कौ सार।
चपला चीरै घन पटल करके हा हा कार,
नाम जरावै पाप को बोलो जै जै कार।
भक्त सताये होत नर सार हीन ज्यों छूंछ,
सुवरन लंका जल गई ज्यों हनुमान की पूंछ।।

------o------

सुनहू विनय श्री राधा रानी।।

भव समुद्र कौ घोर अंधेरो, गहरो जा कौ पानी
बढ्यो जात हौं तीक्ष्ण धार में टेरत आरति बानी
और सहाय यहां नहिं मेरौ, यह मेरी मति ठानी
कर गहि मोहि उबारौ श्यामा, कृपा दान कर दानी।।